7 इस प्रकार उत्तर वैदिक काल के धार्मिक जीवन के क्षेत्र मे व्यापक परिवर्तन हुआ उस समय समाज मे दो तरह की विचार धाराए चल रही थी- एक तो थी यज्ञ प्रधान, कर्मकाण्ड प्रधान ब्राह्मण व्यवस्था तो दुसरी ओर ब्राह्मणों द्वारा उठायी गयी ब्राह्मण व्यवस्था के ऐंधे खिलाफ आवाज अर्थात उपनिषद वेताओं की आवाज

(8) यज्ञ का आभास ऋग्वेद मे भी मिलता है किन्तु एक स्वतंत्र पंथ के रूप मे

इनका विकास इसी युग में हुआ। चुंकि ब्राह्मण एक अनुत्पादी वर्ग था अतः अतः अपने को विशेषाधिकार सम्पन्न वर्ग बनाए रखने के लिए ये आवश्यक हो गया कि वे लोगों के मस्तिष्क पर अपने धार्मिक श्रेष्ठता की छाप बनाये रखे।
प्रारम्भ में तो क्षत्रियों ने भी इस श्रेष्ठता को बनाये रखने में ही अपना हित समझा उसके तीन कारण थे
(i) एक तो हम मानते हैं कि ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनों ही अधिशेष उत्पादन को हथियाने के अभिरूची रखते थे। उस युग के महत्वपूर्ण यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, वाजपेयी यज्ञ राजसुयी यज्ञ इत्यादी का विशेष अध्ययन करने से पता चलता है कि मुख्य इनका उद्देश्य कृषि को बढ़ाना था यज्ञों में किसी न किसी उद्देश्य से सम्भोग क्रिया का महत्व था जो कि भूमि की उर्वरता तथा प्रजनन शक्ति की प्रतिक थी। इस तरह जिस प्रकार आद्य एवं प्राक् वर्गीय समाज में भोजन एकत्र करने के कार्य को सुगम बनाने के लिए जादुयी कर्मकाण्डो सम्पन्न किया जाता था उसी प्रकार वर्ग विभाजित समाज के आद्य जादु का स्थान ऐसे विशाल कार्यस्वरूप यज्ञमय कर्मकाण्ड ने ले लिया था जो विशेषाधिकार सम्पन्न वर्ग ही कर सकता था।

* राजसुयी यज्ञ की अध्यक्षता इन्द्र वृत्रासुर अर्थात हलयुक्त इन्द्र करता था जिसका उद्देश्य पस्त प्रजनन शक्ति को पुनः जागरित करना था
* अश्वमेध यज्ञ में पटरानी बलि के घोड़े के पास रहती थी यहाँ पर रानी प्रजनन का प्रतीक मानी जाती थी। इस प्रकार

पृथ्वी के नियमित रूप से तरल एवं उर्वरक होने जैसे विषयों के लिए भी यज्ञ का आयोजन होता था।

(ii) क्षत्रियों द्वारा कर्मकांडीय व्यवस्था का समर्थन करने का दूसरा कारण यह था कि इनके माध्यम से वे आर्य समग्रता की सीमा पर रहने वाले अनार्य प्रमुख के बीच अपना प्रभुत्व बढ़ा पाते थे

* अथर्ववेद एवं पंच विंश ब्राह्मण में मगध के व्रात्य मुखिया को वैदिक समाज के प्रवेश देने के लिए विशाल कर्मकाण्ड का आयोजन किया गया था।
* इसी प्रकार निषादों के मुखिया को वैदिक अनुष्ठानों में स्थान दिया गया था
* राजसूय यज्ञ के दौरान राजा एक दर्जन रानियों के घर जाता था जिसमें से चार स्त्रियां होती थी। यह इस बात का संकेत करता है कि अनार्य जातियों के मातृकुलीय रिवाजों का नजर अन्दाज नहीं किया गया था।
* यज्ञों के द्वारा क्षत्रियों की प्रतिष्ठा काफी अधिक बढ़ जाती थी अतः क्षत्री यज्ञ का समर्थन करते थे।